दुनिया घर मेहमान

दुनिया घर मेहमान

(प्रेम कविता)

तारानंद वियोगी

शशि प्रकाशन

ISBN 978-81-946386-1-2
दुनिया घर मेहमान

पहिल संस्करण (सजिल्द) : 2020

मूल्य : 200.00 टाका

प्रकाशक
शशि प्रकाशन
गाँव-कालिकापुर, पोस्ट-लक्ष्मीनियाँ, वाया-बलुआ बाजार
जिला-सुपौल-854339 (बिहार)
फ़ोन : 9015323779 / 9818443451
ई-मेल : shashi.prakashan@gmail.com

आवरण चित्र : महावीर वर्मा
आवरण सज्जा : दीपक दिनकर
टाइपसेटिंग : बुलबुल मिश्रा

मुद्रक : आर.के. आफसेट प्रोसेस, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

DUNIYA GHAR MEHMAN (Maithili Love Poetry) by Taranand Viyogi
Published by Shashi Prakashan
Village-Kalikapur, Post-Lakshminia, Via-Balua Bazar, District-Supaul-854339 (Bihar)
Price : ₹ 200.00

अपन सदाबहार जुगलजोड़ी मित्र
केदार कानन–सुस्मिता पाठक
प्रदीप बिहारी–मेनका मल्लिक
अविनाश दास–मुक्ता स्वर्णकान्ता
केँ प्रीतिपूर्वक

अनुक्रम

जेना अन्हरिया मे चान

सुदूर कोशीक घाटी मे ओइ दिन
विदेह निश्चिंतताक विरल एकटा क्षण मे कोनो
बालु पर लिखने छलहुँ हम तोहर नाम
भीजल बालुक छाती पर

बहुत गहिराइ धरि डुबौने छलहुँ अपन अंगुरी
तहिना, जेना बहुत गहराइ धरि पैसल रही कहियो
तोहर हिया के अतल मे

बहुत साफ देखाइ छल तोहर नाम
एनमेन जेना अन्हरिया मे चान
जे क्यो आबि जाय ओइ ठाम, देखि सकै छल
जंगली जानवर आ पानिक पंछी धरि ओकरा पढ़ि सकैत रहय
तते कोमल स्फुरण ओइ अक्षर सब मे उरेहल गेल छलै

लिखलहुँ हम तोहर नाम
तकैत रहलहुँ बड़ी-बड़ी काल धरि निष्पन्द
आ तखन
घूरि एलहुँ
जें कि दुनियादारी छल पसरल ओइ ठाम सँ बहुत दूर शहर मे
अपन शहर मे घूरि एलहुँ

बालु पर लिखने रही ओ नाम
तँ जरूर अछि जे मेटाइये गेल हैत
पानिक हिलकोर ओकरा मेटौने हेतै
कि बसातक झोंक आ झपटी
संभव अछि, जंगली जानवर आ पानिक पंछी सेहो
किछु योग देने होइ उपचार मे,
मुदा, बुझनूक जँ हैब कनियो
तँ मानहि पड़त जे नाम तोहर ओ
मेटा गेल हैत जरूर

बीति गेलै कैक बरस
कतेक केश पाकल हमर, कतेक दृष्टि छूटल
मुदा, लागैए एखनो सदरि काल—
गेलहुँ यदि फेर कोनो दिन कोशीक घाटी मे ओइ ठाम
तँ नाम ओ इंतिजार करैत भेटत

गेलहुँ यदि ओतय कोनो दिन
भरि पांज क' पकड़त हमरा ओतुक्का व्याकुल शान्ति
चिकरि-चिकरि क' करत हमरा सोर
हमर अपने लिखल शब्द,
हमर अपने लिखल अक्षर
हमरा विस्मृत लिपिशास्त्र सिखाओत
एहि तरहें छिड़ियाएब
कि सबटा खुशहाली साइत रसुनतेला जकाँ चूबि जाएत

लागैए
गेलहुँ यदि आब कोनो दिन फेर कोशीक घाटी मे ओइठाँ
तँ साइत
ओत्तहि रहि जाएब।

विश्वास

हम जे बरसैत रहै छी
करिया-करिया मेघ बनि क'
अइ प्यासल धरती पर राति-दिना,
ई बुन्न सब तोरा धरि पहुँचि पबै छौ मीता ?

अन्हार केँ चीरि देबाक दम भरैत
ई किरणमाला
जे अपना आप केँ जरा-जरा क' करै छी उत्पन्न,
तोरा आँखि केँ छू पाबै छौ कनियो ?

बहुत व्याकुलता सँ गोहरबैत छी शब्द-शब्द
ई शब्द सब नदी-प्रवाह जकाँ
आ कि कोनो अदृश्य तरंगो जकाँ कहुना
तोहर मोनक स्पर्श धरि पहुँचै छौ ?

विश्वास दे मीता,
तोरे धरि जँ पहुँचि सकलहुँ नइँ
तँ फेर ई सब किएक, कथी ले ?
कथी ले एते हबगब, कथी ले अगियाबैताल ?

तरीका

खैंचैत रहै छल सदिखन
दुनिया भरिक ताकत दुनिया भरिक दीस,
मुदा, हम सब रही
कि बस बूंदे मे समटल रहि जाएब मंजूर छल

मंजूर छल बस एतबे
जे चितवन के एक नान्हि टा स्पर्श
मस्त क' दिअय चतुर्दिक
जखन कि
दुनिया भरिक लिप्सा के, हबश के बाट
बस हमरे सभक लग द' क' जाइत रहै

हमरा सब केँ चाही छल
सही मे जँ कोनो चीज
तँ से छल दूभिक नोक बराबर एकटा कोनटी
जतय उपजा सकी प्रेमक फसिल
किछुओ नइँ चाही छल आर
हम सब दुइये गोटे रही समुच्चा संसार

ओना तँ अपनहि मे रही सूर्य हम सब
मुदा देखि जँ ली रातुक फड़ल-फुलाएल चान
तारा गनैत बिता दै जाइ छलहुँ

समुच्चाक समुच्चा राति,
भाँपि जँ ली गम्हरल बसातक सिहकी
श्वास मे उतरि अबै छल
जानि नइँ कते कते गंधमादनक सुरभि

कते कही यार
हम सब प्रेम करैत रही
आ
मानैत रही जे
पृथ्वी केँ बचेने रहबाक बस यैह एक तरीका
आब बचि गेलैक अछि।

बाना

रिमझिम केँ देखलियै
तँ लागल—
अपने पूर्वजन्मक एक आर बाना मे
विचरण क' रहल छी

की नाम छी, कतय भेल घर
कोन काज करै छी
किछुओ नइँ रहल मालूम
समुच्चा स्मृतिकोष रिक्त भेल

रिमझिम केँ देखलियै
तँ लागल
जे हँ, ठिके अइ सृष्टि मे क्यो असकर नइँ अछि।

सुरता

सुरता आएल तोहर
आ देख
विलीन भेल अन्हार,
भटकल दिशा सब जूमि-जूमि क' देबय एला निमंत्रण
आ आगू बला रस्ता तँ अपन ज्योतिये लेने प्रकट!

की कहबौ,
एना तँ अइ सँ पहिने
बस एक खाली माइये के सुरता एला पर होइत रहय

दुनिया घर मेहमान

घूरि आ, घूरि आ
पुकारैए सौंसेक सौंसे दुनिया

घूरि आ कि तोरा हम
ई देबौ, ओ देबौ
खुशी देबौ, मेला देबौ
देबौ तोरा उमेर भरिक हरियरी
कि जहान भरिक खुशहाली सँ भरि देबौ

अहिना पुकारैए संसार
जखन क्यो ठोकरा क' बढ़ैए आगू
लेकिन, दैया!
सुनि सुनि क' ई लोभाओन आश्वासन
गमि गमि क' दुनियाक पहलकदमी
तोरा की लगै छौ?
घुरबीही?

घूरब केवल यात्राक अंते टा हो से तँ नइँ
ओ होइ छै अस्वीकारो
पछिलाक यात्राक तिरस्कारो
आ असल मे तँ
जे हम छी, तकरो हारब

दुनिया घर मेहमान रही अपना सब
से तँ निरदैया केँ कहियो कदरे नइँ
आइ जखन धेलहुँए अपन बाट
तँ घूरि आ, घूरि आ

ओकरा जँ नइँ कदर
तँ अपने सब केँ की कदर?
अपने सब किए मानब
अखन धरि जे चललहुँ से गलत चललहुँ
अखन धरि जे जीलहुँ से गलत जीलहुँ
मने हमर जीवन गलत जीवन

चल चल
पुकार केँ बेगरता मे बदलय दहुन पहिने
आचार मे उतारय दहुन पहिने।

कसोह भरि जगह

नान्हि टाक लड़की छें बेबी
एते भारी-भारी बात कतय सिखलें?
कोना जनलें एहन-एहन मरम?

दुब्बर पातर तोहर काया
तैपर विकलताक एते-एते बोझ
अंगूरक लत्ती पर तँ हम कहियो
कटहर फरैत नइँ देखलहुँ

कतय सँ प्रवेश लेलकौ तोरा भीतर एते-एते पीड़ा
बाप तँ बड़ जतन सँ बन्न केने छलखुन
सब गोट खिड़की केबाड़

लगैए खूलल रहि गेलनि कतहु किछु
कसोह भरि जगह जँ खूलल रहि जाय कत्तौ
तँ फेर
अइ चीज केँ भीतर अयबा सँ
के रोकि सकैए?

मन तोहर एतय हमरा लग

देख देख
सूतल अछि एखन कोना निसभेर
जागत तँ पुरबा बसात जकाँ
हमर तन–मन सँ लेपटा लेपटा खेलाएत

कोनो जिद्दी बच्चा सन कखनो
हमर सब अनुरोध–विरोध केँ कटैत
घंटो घंटा झूलैत रहत झूला
हमर उन्माद के हिलोड़ा पर

कखनो ज्ञान जकाँ
हमर मस्तिष्क मे समाएत
कखनो करुणा जकाँ हृदय मे

कखनो काँट बीच गुलाब जकाँ मारत मुस्की
कखनो मड़ुआ बीच हरदी–अक्षत जकाँ चमकत

हमरे सुताओत कौखन द' द' थपकी बुढ़िया नानी जकाँ
कखनो खौलल पानि उझीलि देत हमर बिछौना पर
कि सगर राति जागरण मे राह रचब

ओतय ओम्हर ताकि-ताकि क' परेशान नइँ होइहें दैया
मन तोहर एतय हमरा लग छौ
रातिदिना के हमर चितेरा, पहरूदार

देख ने
टुटलैए निन्न तँ उठि बैसल अछि
टुकुर-टुकुर ताकैए एखन हमरे दिस
आ मुस्की मारैए जुल्मी।

स्त्रीक दुनिया

स्त्रीक एक दुनिया
ओकरा भीतर
एक दुनिया ओकरा बाहर

भीतर—
किसिम-किसिम के फूल फुलबाड़ी
बाहर—
एक-एक डेग
संकट सँ भारी

भीतर—
एकटा राधा अछि
एकटा कन्हैया अछि
बाहर—
जनक छथि लाचार
आ राम निरदैया अछि!

हौ बाबू जोगीलाल,
स्त्री केँ बुझिहह
तँ ठीक अही तरहें बुझिहह

तोरा जकाँ एक दुनिया कहियो
नइँ हेतै ओकर
जे ओकरा ले ठमकि क' चलत
से हेतै ओकर

दीदारगंजक यक्षिणी

अहाँक जाँघ केँ जे क्यो नाँघथि
हे सुंदरि,
हुनकर समस्त मनकामना होइन पूर

अहाँक अपरूप सौंदर्यक स्तुति मे
यैह टा तँ कहल जा सकैए निर्ब्याज—

हे सुंदरि,
जे क्यो धँसथि अहाँक स्मिति मे
से एकर पार उतरथि।

प्रेम करैबला सब

अपन-अपन घर मे सूतल नागरिक सभक लेल
ओ बचबैत रहै छथि धरती
जाहि पर भोरे उठि क' सब चलि सकता

चिथड़ा-चिथड़ा भेल सपनाक मरम्मत मे ओ
सौंसे दिन सौंसे राति एक कयने रहैत छथि

कहियो लिखै छथि कविता
कहियो महाविनाश के विरुद्ध अनशन पर जा बैसैत छथि

योजना लागू करबाक कोनो हक देलकनि नइँ हुनका अन्हरिया
तेँ कहियो ओ फसिलक जड़ि मे ढारैत छथि
'उठह जागह' के मंत्र
जकर अन्न हम सब खाएब, धियापुता खेता,
कहियो फूल केँ दै छथि सुझाव
ओ सब मौसम बदलबा धरि फुलाएल रहथि

सब ठाम सब ठाम गहन अन्हार छै भयाओन
मुदा ओ पूरा एत्ता सँ सिरजैत छथि इजोत

अइ विनाशशील सभ्यता मे
बुझू भगजोगनी थिका ओ सब।

प्रेमी हृदय

आँखि मुनबाक लेल हमरा लग
सुख के ढेरीक संस्मरण अछि
बहूतो

जेना चिड़ै केँ रहै छै ढेरीक रास संगीत
नदी केँ जेना बहुतो बहुत प्रवाह
जेना घास लग मे रहै छै हरियरीक महा महावृत्तान्त,
हमरा लग बहुत संस्मरण अछि
चिड़ै जकाँ गाबि सकलहुँ भरि-भरि मोन
बहि सकलहुँ नदी जकाँ भरि-भरि प्रवाह
चतरि सकलहुँ घास जकाँ भरि-भरि छाँक
जे कतेको जिबाजन्त के गह धरि पैसलहुँ

प्रेमी हृदय ल' क' जनमल रही
हम अहाँ सब जकाँ नइँ ने रही जोगी भाइ!

हम दुनू

एक्के गाछक दू टा डारि छी हम दुनू
हमरा पर फुलाएल फूल
एक्के संग महमह करै छै गाछ केँ
बनबै छै सुशोभन
एक्के संग हम दुनू अहाँक मन मोहैत छी

पतझाड़ आबय तँ हम दुनू
संग-संग करै छी मोकाबला
खुशी बाँटै छी अक्सरहाँ दोसर केँ
जखन कि कतेक असानी सँ बाँटि लै छी
एक-दोसरक दुख आपस मे

एक्के संग घड़ी मे देखैत छी समय
समयक आवाज एक्के संग सुनै छी
हम दुनू एक्के समयक दू धारा छी
अतीत हमरा सब केँ तोड़त कोना
अलगा सकत कोना कहियो भविष्य?

हम दुनू एक्के गाछक दूटा डारि छी
आ अहाँक मन मोहैत छी।

टूटा पाँखि

कहियो हम सब चौगुना क' क' अपन उमेर
समय केँ मोड़ै छी
कहियो भ' जाइ छी छोट अति छोट
एक-दोसरक छाती पर टिकौने अपन माथ
हरेक दर्दक दबाइ हम सब
कते असानी सँ ताकि लै छी!

एक्के सूर्यकिरणक कतेको रंग छी हम सब
एक्के बसातक कतेको सौरभ
क्यो हमरा सब केँ कोना बाँटता, अलगौता कोना
हम सब एक्के तितलीक टूटा पाँखि छी
आ अहाँक मन मोहैत छी।

विस्तार

की कहबिही एकरा?
तोरा पसिन्न छौ हरियर रंग
तँ हमरा दुनियाक हरेक हरियर चीज पसिन्न अछि

तोरा नीक लगै छौ गीत
तँ एम्हर हम
समुच्चा परिवेश केँ
लयात्मक बनबै लेल
भीड़ल छी

मोन छौ ओइ साँझक झलफली?
नाह सँ करैत नदी पार
तूँ बाजल छलें—
हाय रे हाय, कते नीक होइ छै नाह
बेघाट केँ घाट दै छै
मझधारो केँ दै छै किनार!
तहिये सँ नाह बना देने हम अपन जिनगी केँ
कि जे क्यो होथि तितीर्षु
आबथु, उतरथु पार

पसिन्न छौ तोरा बाल-गोपाल
तँ हम

चौबगलीक हरेक बच्चा केँ
करबा मे लागल छी संरक्षित

अरघै छौ तोरा साधारण जिनगी
तँ हम अपन जीवन
साधारण जन लेल समर्पित करै छी

जीयह जी, हमर विस्तार!

सकान पर ठाढ़

पहाड़क कन्हेर पर,
ढलुआ सकानक हाशिया पर ठाढ़
ई महामहोपाध्याय बटवृक्ष
जुआएलो मे अंतिम जुआएल
जानि नइँ कोन कोन जुगक अवशेष केँ
अपन छाल तर मे नुकौने
जय हो बाबा बटेसरनाथ, जय हो

देखहिन, लगैए आब खसला कि तब खसला
एकभगाह उकड़ुए तेहन ठाढ़
मुदा देखहिन, निचिन्त कते!
कतेको बेर भेल हैत भूकंप एतना सदी मे
कतेको बेर स्खलित भेल हेती ई पार्वत्य भूमि
मुदा देखहिन, निचिन्त कते!

कोना बचला ई यौ, कोना बचला
—नंदूक प्रश्न।

—रहल हेतनि हमरा सभक लेल ममता
आएत चौदह इस्वी तँ पहुँचबनि हम सब
तेँ बचल हेता
—बाजलि तूँ

नइँ–नइँ बाबू, एकदम्म नइँ–नइँ
अपना सभक जे हेता प्रपौत्र
अहिना एता ओहो सब सन निनानबे मे
हुनको सभक लेल छनि ततबे ममता
देख ले, जटाजूट कोना नमराबै छथि!

सब गोटे देखलहुँ बाबा महराज केँ
करै गेलियनि नमस्कार
पुछलें तूँ रहस्य तँ कुपित भेला ढेर
बलु इहो कोनो पुछबाक बात भेलै!

देखहिन, धड़ छनि जते दूर पसरल अकास मे
ततबे गंहीर छनि गांथल जड़ि चौंदिस
अतल मे, तलातल मे
जतबे बेटिकट मुस्की छनि वजूद मे सनातन
ततबे बेशर्त करुणा छनि जकथक जिबाजन्त लेल

मानल जे लोक खसितो छथि
मुदा एहन लोक किए खसता?
कतबो सकान पर वक्त क' देने हो ठाढ़
एहन लोक किए हेता दलमलित?

की खूब, की खूब

पहाड़क हुरदंगिया कन्हेर पर उतरि आएल
चेथरी-चेथरी मेघ
सिहिक-सिहिक बहैए बसात
हाबडीब मे ठुमुकि-ठुमुकि
घुमरैए चेथरी मेघ
जेना चरी करैए अबलाक खेत मे महाबलीक घोड़ा

—की खूब, की खूब
मेघे के छियनि पहाड़
आ पहाड़े के छिया मेघ,
एक दिन लेल हम-तूँ एलहुँ एतय सैलानी
तँ एकटा केँ कहै छियै घोड़ा, एकटा केँ अबला

की खूब, की खूब!

हुकरब

घूर लग बैसब दू गोटे सँ
आ तापब आगि
एहि नीरंध्र जड़काला मे
खाली आगि तापब थोड़े होइ छै!

जखन सँ एलाहें ई शीशम महराजक चेरा
बाँसक धुअंत बूट मे जबानी आबि गेल अछि
धुआँ-धुआँ रहय पहिने जे आगि
बूझ तकरा आब विकास भेटि गेलै

बजली बाबू—ई आगि पहिने हुकरैत रहय

—कम्माल कहलें बाबू, ठीक कहलें
धुआँ थिक आगि के हुकरब!

—तखन तँ पुछबें प्यास की थिक?
ओहो तँ थिक हुकरबे, आत्मा के,
शर्त जे सत मे ओ प्यास होइ
सत मे अइ दुआरे जे
प्यास के व्यापार सेहो भ' सकैए
आ सैह छै आइ सब सँ बरक्कति मे

—आ जँ पुछल जाय जिनगी की थिक

तँ सेहो थिक एक प्रकारक हुकरबे
ओइठाँ चिन्हास-चिन्हास हुकरै छै
चिन्हास जे कि ओ छोड़ि क' जाएत

रौ मे बहैत पिठउपार बजली बाबू
तखन तँ ईहो
—ताकत के ई तांडव सेहो कि कोनो हुकरबे थिक?
—भरिसक ठीके थिक हुकरबे
ओ हुकरब थिक अखरा दरिद्रताक
जे कि जनम-जनम सँ भीतर जमकल अछि

—सब सँ बढ़ियाँ अपना सब!
बजली बाबू कि हम भरि पाँज हुनका पकड़लहुँ।

छटर पटर गंभीर

लगाएब जँ फोन
तँ कखनो नेटवर्क बीजी बताओत
कखनो स्विच ऑफ
कखनो-कखनो तँ मोबाइलक समुच्चा कुकियाहट
शून्य अंतरिक्ष मे जा विलीन हैत

लागियो जँ जाय कखनो
तँ होइत रहत ट्रिंग-ट्रिंग
साइलेंट मोड मे राखल हो साइत
आ ओ पितियौत सब सँ बतियाइत हो
आ कि कीचने मे बना रहल हो आजुक स्पेशल डिश छोले-भटूरे,
आ कि दोस्ते सभक बीच क' रहल हो
घमसान युग-चर्चा

आएत जखन वसंत कोनो काल
तँ गप हैत किश्त-दर-किश्त
बीच-बीच मे हुलकी दैत रहत दुनिया सेहो किश्त-दर-किश्त

लेकिन, तैयो
मस्ती छाएत हमरा पर तेन्ना
जेना राजमहलक पहाड़ी पर मेघ छाइत अछि
मुदा, तखने जुटती केम्हरो सँ मम्मी

झट द' कटि जाएत फोन
दुनियाक आहट कौखन सबटा आपकता केँ धता बताओत

ओ जे अछि नटिनियाँ
छटर–पटर गंभीर
बुझियौ तँ सब कथू वैह थिक हमर
ओ जँ नइँ होइतय हमर
कोना दिन जइतय अइ बतहिया के?

सुरक्षित पृथ्वी

देखहिन तमाशा
नान्हि-नान्हि टा डेग भरैत
कोना ई नन्हकी चिड़ैया
हमरा कोठली मे ढुकि आएल अछि!

मटकि-मटकि क' ताकैए
कखनो एम्हर कखनो ओम्हर
की ताकैए?

अरे हँ, चिड़ैया ताकैत हैत दाना
जकरा ताकैत-ताकैत हमहूँ
परदेसक अइ कोठली धरि चलि आएल छी

ठीक कहलें बाबू तूँ, ठीक कहलें
काल्हि थोड़बा दाना आनि क' छिटै छी
हम अपन सिरहाना,
चुग-चुग करैत तकरा नन्हको
अयती हमरा देह धरि
आ हे, पक्का कहै छियौ
हमरा कन्हा पर चढ़ि बैसती

ओह, तखन ई पृथ्वी कते सुरक्षित भ' जेतै!

जालिम समय मे

कविता लिखू रिमझिम
भाव केँ दियौ अभिव्यक्ति
चेतना केँ कने भौतिक तल पर लाउ

सौंदर्य अहाँक भीतर जे व्याप्त
तकरा वातावरण मे कने छिड़ियाब' दियौ

कविता लिखू
से नइँ, तँ चित्र बनाउ
से नइँ, तँ संगीत बजाउ
से नइँ, तँ ध्यान करू
मुदा, किछु करू धरि जरूर, रिमझिम

समय बड़ ओठर भ' गेलैए
चारू दिस पसरल छै नकार
लिप्सा जें कि बढ़लैए
ओही हिसाब सँ घटलैए समस्वरता

किछु धरि करू जरूर
अपन हाजिरी बनाउ
जे एहन जालिम समय मे
एकटा अहूँ भेलहुँ।

मोहल्ला भरिक जुआन लड़की सब

कहि दहिन बाबू, कहि दहिन
अपन-अपन जुआनी बचा क' राखय
मोहल्ला भरिक जुआन लड़की सब केँ कहि दहिन
बचा क' राखय अपन ऊष्मा
अपन उत्तेजना बचा क' राखय
सब खपसूरत लड़की सब केँ कहि दहिन

एना नइँ भरय रोज-रोज वसंतक सौरभ अपन फेफड़ा मे
कि भीतरक सबटा खटासे बिला जाय
ने एना भीजय सावनक फुहार मे
कि भीतरक सबटा आगि छाउर बनि क' रहि जाय,
कहि दहिन

कहि दहिन जे कोनो कोमल स्पर्श जकाँ
सोनहुला भोर एखनो जिंदा छै ओकरा सभक भीतर
एते लगाव नइँ राखल करय अन्हरिया सँ

सही बात छै
तिलक कामोद जीबाक उमेर छै ओकरा सभक एखन
धरती सँ ऊपर उड़बाक उमेर
उमेर लय केँ छूबाक

उमेर गंध केँ सुनबाक
सही छै जे छप–छप डेग सँ
अभिसार सजेबाक उमेर छै एखन

मुदा, कहि दहिन
दुश्मन के अंध विवर तलासबाक
तरासबाक ई बदसूरत दुनिया
तकरो उमेर एखने छै ओकरा सभक,
कहि दहिन

सुतय जेबा सँ पहिने स्विच ऑफ करबाक जरूर छै उमेर
लेकिन मशाल जरेबाक तँ सेहो यैह उमेर छै

यदि मेहदी रचेबाक
बसेबाक अपन स्वप्नक अट्टालिका
बाँहिक हार पहिरेबाक
जुआन भेल लड़का सब केँ
यदि एतबे भरिक लेल छै ई उमेर
तँ शैतानक मूड़ी छोपबाक उमेर कहिया हेतै?

बचा क' राखय अपन ऊष्मा, अपन उत्तेजना
कहि दहिन।

प्रेमपत्र

तोहर अइ पत्रक उमेर
एखन पाँच बरस भेलहुए
आब दस बरस हेतौ
बीस बरस, पचास बरस
फेर तँ शताब्दी बीति जाएत

तहिया हम-तूँ
धरतीक कोखि मे कतहु
अँखुआएल रहब
संभव जे दूभि बनि क'
संभव जे चुट्टीक अंडा बनि क'

प्रेमपत्र तँ रहि जाएत एत्तहि
जानि नइँ ककरा हाथ लागत
कोन धरानी हेतै ओकर मौअति
दीमक चाटत कि चाटता रिसर्चर

कहै छियौ तँ हँसियो लागैए
प्रेमपत्रक कतहु मौअति हो ?
रे, ओ तँ जीयत आत्माक सान्हि मे
दूभि होइ तौं, अंडा होइ तौं
ओ तँ जीयत ओइ रेह मे

जकरा ध' क' चलैत अपना सब
उतरलहुँ पार

प्रेम आ विश्वासक हरेक आखर
अतमे मे बसै छै बाबू
बाँकी प्रेमपत्र जे छी ई कागज के पन्ना
से तँ बूझ चाटनिहारक आहार छी।

मीता, तोहर हँसी

जिनगी बड़ अदगोइ बदगोइ भेल जाइए
साँझ केँ डूबैए जे सुरूज से वैह फेर भोर केँ उगैए नइँ
रातुक कालिमा किछु आर घटाटोप भेल जाइछ
सुन मीता, अहिना खिलखिलाइत रह
अहिना खंड-खंड बाँट कालक शाश्वतता,
अहिना अन्हारक एक-एक कपाट तोड़ि खसा
अहिना हँस कि तोहर हँसी मे सबटा साफ देखाइए
एकहक टा बाट, लक्ष्य कतय, सेहो

कठिन कहाँ छै जीवन
जँ अइ मे हँसी हो तोहर आलोकमय,
अन्हार रहतै राति जँ हाथ मे हो मशाल
कि भयप्रद नदी, जँ मजगूत नाह हो संग ?

बहुतो तँ प्रयास केलक अछि अन्हार
उकन्नन करी प्रकाशक वंश,
बहुतो तँ आक्रमण केलक अछि
त्राहि-त्राहि मचा देलक अछि कतेको बेर,
लेकिन फल ?
जिबिते अछि प्रकाश, जिबिते छी अपना सब
जिबिते रहता दुनिया केँ ठिठुआ देखबैत प्रेम केनिहार लोक

सुन मीता, अही प्रकाश वंशक संबल छी तोहर हँसी
अहिना खिलखिला, खंड-खंड बाँट कालक शाश्वतता
अहिना उठा सूतल केँ, जगा बिसरल केँ
अहिना चलैत चल बाइसम सदी।

कुमारी विद्या राय

अन्हार घरक कोनटा लग मिरचैयाक झांखुर जकाँ
तूँ जनमल रहें जरूर,
मुदा आब जूहीक घौदा जकाँ
अपन अस्तित्वक चेन्ह बसातक प्रस्तर-हृदय पर पाड़
गौआँक छाती पर शिलालेख लिख कुमारी विद्या राय!

धुआँक गुजगुज अन्हार मे तोहर भ्रूण पोसाएल रहौ जरूर
मुदा आब
अपन सक्कत हाथ सँ अइ बाती सब केँ जरा,
अन्हरिया भगाबक अभियान पर बहराएल छल कहियो ई बाती सब
मुदा अन्हरिये एकरा भगा देलकैक

अपन घरसूड़ कनी उठा, छाती कनी तान
गौआँक भ्रम कनी तोड़
कि मैथिल कन्या केँ रीढ़ होइतहि नइँ छैक,
ई गौआँ लोकनि
पाँच हज्जार बरस सँ रीढ़विहीन कन्या जनमेबाक निचिन्ती मे छथि

सुरूज जे आइ धरि तोरा कोठली सँ बाहर उगैत रहलौए
आइ तोहर अतमा मे उगि रहल छौ
अन्हार कनी उपछ तूँहूँ
रे, तोरे सन-सन इहो सब छथि सुरुजक सातो किरिन

त्वरा संवेग भरिता
आँखि खोलि ताक तँ!

पाँच हजार बरस सँ तोरो रीढ़ होइत आएल छौ
सरीसृपक पिजरा केँ किए तूँ मानबें अपन गहबर
किए स्वांग करैत रहबें मिरचैयाक झांखुरक हे जूहीक घौदा,
अपन सक्कत हाथ सँ अइ बाती सब केँ जरा
गौआँक छाती पर शिलालेख लिख कुमारी विद्या राय!

उनटान

झरकल नइँ रहितह रोटी
जँ बस खाली
बखत पर उनटा देने रहितह

गाड़ियो एना छुटितह नइँ
प्लेटफार्म पर पहुँचैत-पहुँचैत,
ने एते शेष रहि जइतह अनकहल
ने एते एते अवशेष अनकयल

जतबा गमा क' पाबि सकलह एतबा किछु
दैया हे
अइ सँ कम पर पाबि सकै छलह अहू सँ बेसी,
हँ-हँ, अइ सँ कम पर
जँ बस खाली
बखत पर उनटा देने रहितह।

मधु

रुकैँ जुनि बाबू, चलें
कि आउर झबर झबर डेगें चलें

देखहिन, सुरुज केँ आब जल्दिये
डूबि जेबाक अछि
जखन कि अपना सब केँ एखन
पहाड़क ओइ पार के गाम धरि
पहुँचिये क' सुस्तेबाक अछि

रे, अही ठाम जौं आकक गाछ मे मधु झरितय
तँ क्यो पहाड़ धरि चलबाक चेष्टे किए करितय?

अनुपस्थिति

घर तँ ओत्तहु अछि एकटा
आ एकटा एत्तहु अछि,
जेना हसीना बेगम आ बंटी ओझा
संग-संग देखथि दुतियाक चान
चमक तँ ओत्तहु अछि तहिना
जेना एत्तय अछि

तखन कहियौ
ममता अछि ओतय
तँ ओतय हम नइँ छी
खगता अछि एतय
तँ एतय चान नइँ अछि

असमंजस

पलछिन लेल तँ भेटै छली
देह मे साटियनि कि मोन मे—
अही असमंजस मे झहरै छल उत्ताप

अहलदिली सँ भरि-भरि अनसम्हार
क्षण जोगेबाक चेष्टो नइँ कयल लागय पार तैखन
पलछिन लेल तँ भेटै छली
अपसोच
से पल सम्हारैये मे बीति जाय

पल ओ जोगा सकलहुँ नइँ कहियो
अही विकलता सँ जनमैए फेर फेर उत्ताप

हे उत्ताप,
कहिया तू झहरबह ओहि एक पल मे
आ, झखारबह हमर असमंजस?

अर्धनारीश्वर

दू दिनक लेल तँ आएल छलें
साटि गेलें अइना पर अपन बिन्दी

ई बिन्दी छी कि तोहर दिल
छूबै छी
तँ धकधक करैए

ई केना हैत
जे कतहु हम रही
आ तू नइँ रहबें,
हुअय तँ बरु होउ
मुदा तकरा तू केना करबें मंजूर ?

बिन्दी केँ देखै छी
तँ तोहर भाल देखाइए
अपन गाल छूबै छी
तँ तोहर गाल बुझाइए।

पुरुख जाति

नेनपनक घर, स्कूलक ओसार, हॉस्टलक रूम
बालापनक बाधबोन, गाछ बिर्छ, टिकला आ झड़बैर
तेहन मस्त क' जाइ आनंदित मोन पड़िते
जेना मानू रमणी के जाँघ

नेनपनक स्मृति के जखन खुलय केवाड़
एह, रंग-बिरंगक तितली सब हेलैत प्रकट होइक
मन के नैया पर सवार
मस्त मस्त लहकी सब, चहकी सब

तेँ कि मानल जेतै जे जैठाँ बीतल हुअय अतीतक कोनो टुकड़ी
तकरा लेल पुरुखजाति बड़ प्रेमिल!
नइँ-नइँ, सत्य की तँ पुरुख जाति बड़े स्मृतिहीन, बड़े अतीतघ्न
इतिहासद्वेषियो ततबेक,
स्त्री के पेट के ओ कोठली ओकरा किन्नहुँ नइँ रहैत मोन
जतय नौ मास गुजारि क' ओ धरती पर आबय
ओही स्त्रीक बनौने बनय पुरुख
रचय गीत कबीत बड़े भाग मानुस तन पावा

स्त्रीक अतमा तँ खैर पैघ बात भेलै
ओकर देहो धरिक बचल नइँ रहैक कोनो कदर पुरुख जाति मे
स्त्री केँ ओ गीजय, मत्थय

स्त्री केँ ओ जिंदा जरबय
चलबय ओकरा गरदनि पर पिजाओल खंडा
स्त्री केँ ओ जुत्ता जकाँ पहिरय
जै मे पयर ढुकाओल जाइछ केवल
ओकरा क्यो करेज सँ नइँ लगा सकैए,
अखिल जिबाजन्तु मे सब जनै छल करब प्रेम आ प्रतीक्षा
एक पुरुख जातिये नइँ क' सकै छल
ओकरा मे तँ पाँच बरखक बच्ची संग होइ छलै बलात्कार।

आत्महंता

पिताक भाषा मे बात करै वाली लड़की
देखू ने, प्रेम केँ कहैए आब सीढ़ी

हरियर वनस्पति सँ बेसी उपयोगी छैक
आब ओकरा लेल सूखल काठ,
ओहि सँ आगि लगाओल जा सकैए

पिताक शासनाधिकृत भाषा मे
फूल सँ बेसी जरूरी होइत छैक पाथर,
फूल मारि क' अहाँ
ककरो घरक शीशा धरि नइँ तोड़ि सकै छी
कपार फोड़ब तँ दूरक बात भेलै

लड़की पिता हुअय चाहैत अछि
चाहैत अछि जे काल्हि हो, से आइ भ' जाय

लड़की केँ बूझल छै
सबटा आक्सीजन पिताक कैदखाना मे छैक
माय बरजै छै ओकरा
नइँ-नइँ, ई सब चीज कैदखाना मे बंद करबाक नइँ थिक

लड़की माय नइँ हुअय चाहैत अछि
माय ओकरा बान्है छै, करै छै बाधित

भ्रूणहत्या सँ रोकतै ओकरा माय
माय ओकरा सँ पिता हेबाक ललक के कारण पुछतै
माय करतै अगिला समय के भविष्यवाणी
लड़की माय हेबा सँ घबराइत अछि
नदी बन्हाय नइँ चाहैए
सौंसेक सौंसे उजास असकरे पीबि जाय चाहैए लड़की

रोकि सकू तँ रोकू प्रेमी
लड़की केँ आत्महन्ता हुअय सँ रोकू।

भनहि विद्यापति

कहाँ गेल, कहाँ गेल
कहाँ गेल हमर जीवन?
हमर जीवनक संगीत कहाँ गेल?
आ हमर हिस्साक इजोत?
आ हमर हिस्साक अधिकार?
आ हमर हिस्साक गरिमा?

हे वनमाली
तोहर मदिर थपकी सँ भ' क' पुलकित
सूति रहल रही निसभेर
हेरा गेल रही मस्त अपने भीतर,
भीतर सँ तते सुरक्षित पौने रही अपना केँ
तोहर कोरा मे

तते भरोस तते भरोस रहय तोरा पर
जे सबटा सुधि-बुधि गमा देने रही प्राणेश!

आब
जागलहुँ अछि तोहर थापड़ सँ
तँ देखह ने
हमरा अपन जीवने नइँ कतहु देखाइए
कोम्हर जा दुबकल हमर प्राणक विहान?

कतय नुकायल हमर ऊर्जा, हमर ऊष्मा
हमर लय, कन्हाइ!
टापर टोइया दै छी तँ चहुँदिस
कतहु नइँ क्यो भेटैए सहाय
हे, तूँहूँ किछु करह प्रिय, उपाय!

हेय्य्यैह!
य्यै भेटल हमर संघर्ष
य्यै हमर नोर, य्यै हमर दायित्वो
मुदा ओह
कहाँ कतहु देखै छी अपन जीवन, अपन सौरभ
कतय नुकाएल हमर संगीत, हमर गौरव?

कवि विद्यापति कहैत छथि—
एवंप्रकारें
नाना प्रपंच सँ
स्त्रीक हक चोरौनिहार चतुर मुरारी
अहाँक कल्याण करथि।

पाग

दुनिया बहुत बेदिल छै
हौ बाबू जोगीलाल
कते हम तोरा कहबह
तूँ की कम बुझक्कड़ लाल!

बड़ मश्किल सँ कतहु-कतहु
दिल मे दिल मिलै छै
देखितहि छह हवाल
जे तै सँ इन्द्रासन हिलै छै

मिलल जँ छै दिल मे दिल
तँ केवल पाग दुआरे
एकरा तोड़ह नइँ,
के ककर होइ छै
अइ नामुराद जहान मे हौ भाइ
नइँ-नइँ, किन्नहुँ एकरा छोड़ह नइँ।

प्रेम मे एटिच्यूड

प्रेम मे एटिच्यूड
दुख के वायुमंडल जकाँ
सब ठाम विद्यमान

एनमेन ओइ हिंसा जकाँ
जकरा हरेक ठाम, हरेक जगह
पसारि क' रखने लोक अपने
अपन अपन हिफाजतक लेल।

सीढ़ी

सीढ़ी मे सेहो आत्मा बसै छै
बेचैन, तलमलाइत आत्मा
विजेता लोकनि जइ पर फटफट चढ़ैत
अपन मंजिल पर पहुँचि जाइत छथि

आत्मा बसै छै बेचैन, तलमलाइत
ओइ सीढ़ियो मे

विश्वास नइँ हो
तँ कहियो सीढ़ी बनि क' देखबै!

भीष्म

शर-शय्या पर लेटल भीष्म
कोनो एक आदमीक नाम नइँ भ' सकैए
पृथ्वीग्रह केँ बनाबय जे चाहला प्रेमहीन शरशय्या
हरेक व्यक्ति भीष्मे भीष्म थिका, दैया!

पुरुखक लेल प्रेम

ओह, एत्ते बेसी प्रेम!
एत्ते बेसी प्रेम हमरा नइँ कयल कर राजो
नइँ-नइँ, किन्नहुँ नइँ

बात बूझ
कतबो किच्छ छी
तँ आखिर पुरुख छी एकटा हम
कत्तहु कोनो खदहा मे गीरि
पितृसत्ता भ' जा सकै छी
कोनो दिन

नइँ-नइँ, कान नइँ,
बात बूझ
कर प्रेम, खूब कर, डूबि क' कर
मुदा, अपना ले तखनहुँ बहुत बचेने राख,
सबटा प्रेम पुरुखेक लेल नइँ राजो, किच्छ अपनो लेल।

औकाति

नराज छी तोरा सँ
तँ साफ बूझ
तोरा पर अपन वर्चस्व चाहै छी

आ जँ से नइँ
तँ तूँही बता
लय जे पसरल अछि एतय सँ ओतय धारासार
हम-तूँ भ' सकै छी एके राग के दू आरोह
जेना एक्के कायाक दूटा अंग
कि एक्के मायाक दूटा रंग

नइँ-नइँ, साफ बूझ
नराज छी जँ तोरा सँ
तँ मतलब, अपन औकाति देखा रहल छी।

इंतिजार

किस्मत तँ छलय पूरा
लेकिन हिम्मत नइँ छलय

अरे, हम तोरा पाबि गेल रही बाबू, तोरा
अइ सँ आर बेसी बढ़ि क'
किस्मत आखिर दइये की सकैत रहय?

मुदा, कहलियह ने
हिम्मत नइँ छल

अभियान जँ लटकै छै
तँ से किस्मतक ओजह सँ नइँ,
हिम्मते नइँ रहै छै!

बूझ तँ!
हम सब की करै छलहुँ?
किस्मत बदलबाक इंतिजार करै छलहुँ।

कालक्रम

बारह इस्वी तँ आब चललौ बाबू,
तेरह एतौ, ओहो जेतौ
तखन सोलह, तखन सतरह
अहिना चलैत-चलैत कहियो हमहूँ चलबहु
कहियो तूँहूँ

ई मेला, ई झमेला
अहिना रहि जाएत लागल के लागल
अहिना ई बजार चकचक करैत रहत
झकझक करैत रहता दियाद लोकनि अहिना

बाबू गे
अहिना कहियो अगिला शताब्दी के
बारह एतौ, तेरह एतौ
तहिया के तारा, के ताराप्रिया?
ओकरा सब केँ चिन्हियो सकबै अपना सब?

बचल की रहत
तँ बस प्रेम!

तोरे झीक पाबि क'

दैया, तोरे झीक पाबि क' बनलहुँ हम ऋषि
रचलहुँ गीत-कबीत
तोरे नोर टपकल तँ कनलहुँ जार-बेजार
कखनहुँ तोरे पौलहुँ संग तँ उमड़ल अभिमान
कखनहुँ तोरे मूनल आँखि सँ व्यापल अन्हार

रस्ता चलैत-चलैत एते दूर एलहुँ
कोना कहि सकै छी
जे हमही बनलहुँ ऋषि, रचलहुँ गीत कबीत
हमही एलहुँ चलैत-चलैत एत्ते दूर ?

तोरे सह पाबि क' उसाहैत रहलहुँ हाथ
झारैत रहलहुँ टिरबी,
तोंही भीतर फुलेली भकरार
तँ बाँटैत रहलहुँ सौरभ !

दैया, तोंही तँ।

समांग

दैया, अन्हरिये जँ देलह
तँ एहन घटाटोप किए देलह
जे अपन छांहो धरि छोड़ि जाय संग!

अनिवार्य जँ छल तँ दीतह जरूर वनबास
मुदा, वन तँ एहन नइँ चुनितह हरीतिमाहीन!

तोहर समांग छलियह हम, दैया।

तोरा बिना

तोरा बिना जीवन मे लय नइँ, लसि नइँ
चमक नइँ आँखि मे, ने जीह मे रबरबी
तोरा बिना किच्छु नइँ
ने पयर मे जुत्ता, ने ब्रह्मंडल पर मुरेठा
तोरा बिना चीनी मीठ नइँ, नोन नइँ नोनछराह
तोरा बिना किच्छु नइँ ठीक, ने दुरुस्त

कविता, तोरा बिना जीवन मे लय नइँ
ने भास गीत मे
ने आस भविष्यक

एहनो तँ कोनो गलती भेल नइँ
जे सर्वथा निषिद्ध हो प्रेम मे कि युद्ध मे,
एहन गेनाइ कोन गेनाइ
जकरा बाद किछुओ बचय नइँ ठीक, ने दुरुस्त

घर घुर कविता, घुर घर
रे, कविता जँ रहत नइँ कवि लग
तँ बहत कोना मौन मे ?
आ जँ बहत नइँ
तँ रहत कतय कविता ?

गंतव्य

रस्ताक एक मोड़ पर चौबटिया
चौबटियाक चारू दिस चारि टा रस्ता
रस्ता मे मोड़, मोड़ पर फेर तेबटिया, चौबटिया

चौबटिया पर चारि दिस इजोर
से चारू अपना अपना दिस करैत सोर
जाहि रस्ता पर चली, ताहि मे फेर मोड़
तेबटिया आ चौबटियो फेर

ओह हे दैया,
चलैत-चलैत एहन नइँ हो कोनो दिन
जे जेबाक रहय मधुपुर
आ बलसाड़ मे भिड़न्त ल' रहल छी,
ठहरबाक रहय राति-बीच गुणबन्ती
आ पुष्कर पहुँचि क' धरमशाला भ' रहल छी

हे दैया, देखिहह।

रंग

थोड़बे संगीत अछि
बहुत–बहुत सोर अछि
थोड़बा टा धन अछि
बहुत–बहुत चोर अछि

सम्हरह मीता, सम्हरह

थोड़बे टा रंग, आर
पूरा जीवन सादा अछि
थोड़बा अछि वक्त
आर, मारिते रास बाधा अछि!

एत्ता

माटिक एत्ता सिद्ध हो
भने श्रेय क्यो लेथि
बाबुक रोपल गाछ जनु
संतति केँ फल देथि

हिसाब

चारि दिन के जिनगी मे
चारि सौ बेर कनलहुँ
दीन, दुर्बल, भिखारि, चोर
की-की ने बनलहुँ!

अनबाक रहय नेह-छोह
तकबाक रहय राग-बंध
अगियाबैताल भेल
झाँटि-पानि अनलहुँ।

एक गेम जिनगी

दौड़ल छलहुँ कतहु सँ
कतहु एक ठाम पहुँचलहुँ
की अपन घर पहुँचलहुँ
जेना चिड़ै पहुँचैए अपन खोता?

जतय पहुँचलहुँ सेहो मरदे थिक एकटा बाटे
मुदा पहुँचलहुँ तँ लागैए जेना बटोही पहुँचल अंडीक गाछ
जिराएब, मुदा कते दिन जिराएब?
फेर चलबाक अछि आगू
साँझ होइत-होइत पहुँचबाक अछि फेर कोनो एकटा ठाम

एकटा ठाम मने फेर कोनो अंडीक गाछ?
की हौ जोगी, फेर अंडी गाछे?
नइँ कोनो खोता?
नइँ कोनो घर?

जे से
चलह, फेर सँ भ' चलय एक गेम जिनगी।

या घट भीतर बाग-बगैचा

बहुत फूल फुलाएल अछि
भीतर बगैचा मे
रंग-रंग के ढंग-ढंग के
बहूतो फूल
सब फूल केँ चाहियैक खिलावट
एक-एक केँ लय, सराबोर करैत ठेकान
सब केँ जँ चाहियैक ओकर सम्यक उठान
तँ हक सेहो सब केँ
अपन-अपन गुणग्राहकक

एक-एक फूल केँ चाही माली
एक-एक केँ सवकास
अवकाश भरल आकाश सब केँ

देखिहह बाबू,
तोरा होइत कोनो फूल मौलाबय नइँ
देखिहह।

चाहत

अहिना बरिसैत रहिहें मेघ
हम्मर सुन्न आँखि केँ बनबैत रहिहें अहिना सजल, पानीदार

जनम-जनम सँ हम
यैह चाहत तँ कयल अछि
देखिहें नइँ हमर अपात्रता
बिसरि जइहें जाबन्तो अवगुण
करुणा रखिहें मेघ
अहिना बरिसैत रहिहें
भरैत रहिहें खाधि हमर ऊसर के।

हमर की अछि!

तोड़बें
तँ टूटि जाएब कोनो दिन
झड़बैर जकाँ

कोशीक धार जकाँ एनमेन
मोड़बें तँ मुड़ियो जाएब कोनो दिन

हमर की अछि!

जोड़बें तँ जुड़ियो जाएब
नेव के इट्टा नाहित
छोड़ेबें तँ छुटियो जाएब
काजर के दाग नाहित

अप्पन सोच, दुश्मन
अप्पन सोच।

घुरती

जिनगीक अइ महाग्रंथक
ओ पुरान सबटा अध्याय हमरा घुरा दे मीता

भटकब नइँ
अतीतक बियाबान मे,
चुभकैत हरीतिमा मे
बिसरि जाएब नइँ बाट
—प्रतिश्रुत छी

अनुभवक ई द्राक्षारस खटकैत नइँ अछि
मुदा, बुढ़ाएब नइँ सोहाइए
नीक तँ लगैए जरूर एक-एक बिन्दु पर
खूब गहिराइ सँ कयल विचार
लेकिन तोहर मुस्की मृदुल
सेहो नीक लगैए

बहूते भाबैए मीता
संघर्षक हरेक मोर्चा पर कयल
जी-तोड़ परिश्रम
मुदा तोहर बंकिम नयन सेहो ततबे भाबैए

जतबा सोहाइए
अपन कोनो प्रिय पुस्तकक
प्रियतर पृष्ठ
तोहर धुम्मस सेहो ततबे सोहाइए

किछु पेबाक लेल किछु गमा देब
अनिवार्य कानून नइँ थिक मीता
प्रतिश्रुत छी
जिनगीक अइ महाग्रन्थक
ओ पुरान सबटा अध्याय घुरा दे।

विकल्प

दू मे सँ एकटा चीज अहाँ केँ छोड़ैए पड़त शकुन
या तँ अहाँ लिय' प्रेम
या तँ लिय' उड़ान

अइ दुनूक सहकार
तेहनाहे कठिन
जेना
या तँ अहाँ लिय' धर्म
या तँ लिय' शान्ति

दू मे सँ एकटा चीज अहाँ केँ छोड़ैए पड़त।

निबाह

आदति सब छुटतौ
जिद सब
लोक सब छुटतौ
संबंधी आ गोतिया सब
सब छुटतौ बेराबेरी

निबाह जौं चाहबें मुन्नी,
छोड़य तँ पड़बे करतौ!

गलती

जै बाट द' क' बहलहुँ कोशी–कमला बनि
पाछू तकै छी तँ अथाह लगैए—
कोना हम भ' सकलहुँ रानू सरदार
कोना गुदस्त क' लेलहुँ जिनगी
खेपलहुँ कोना ओ दिन, ओ समय
समय, जे मार्ग देलक कोशी सन दाइ केँ
नेतृत्व देलक जिनगी सन चीज केँ

अनसम्हार लगैए तैखन
जखन पाछू दिस तकै छी
ताकल केँ बिचारै छी
तार–भियार करै छी विचारल केँ
ओना तँ गे कोशी,
के तूँ आ के हम?
जीवन जँ थिक प्रवाहित धार
तँ के कोशी, के रानू सरदार?

महुआ–घटवारिन के आँखि जे ओतय भुकभुक करैत
आ तै आँखि मे बसल जे अधीरा पृथ्वी,
मिला हाथ
तै पर उतारब ग' अपना सब अनुराग

गे कोशी, पाछू दिस तकै छी से गलती करै छी।

उत्तरक्रिया

श्वास-श्वास मे जे बसल छली आर-पार
से आब कोन नगर बसै छथि,
बूझल नइँ अछि

कोन घाट नहेली गंगा नहाइ काल
कोन सवारी पकड़ि क' पहुँचली नबका नगर
कि पयरें पहुँचली,
जाहि बाटें गेली अपना देहें
ओइ पर दूभि जनमल कि पीचरोड बनल,
नइँ अछि बूझल किछुओ
किछुओ जानल नइँ अछि

तेँ की मानि लेब जे ओ जे गेली
से निट्ठाह चलिये गेली ?

अखाढ़क पहिल बुन्न पड़ल अछि हिया पर
तँ बलबला क' पड़लीहे मोन,
छथिहे एखनो कतहु हमर अतल मे तलातल मे
तखने तँ अभरलीहे

कतहु हो ओ नगर, ओ पृथ्वीये पर अछि
मानत क्यो जे हमर ओतहु एक घर अछि!

समुद्र मे नोन

मोनो जँ हम तोरा पारी तँ कोना क' पारी
हिया मे हूब नइँ
चौदिस पसरल आतंक मे इहो शामिल
जे तों ओकरे सभक संग छें
सुख के लिप्सा मे लीन तोहर मोन
मात्र लिप्सा मे
सुख तँ तोहर तते दूर तते दूर
जे बुझ तही वेदना मे कविता लिखै छी

आदमी जखन हेराइए अपन झुंड सँ
भेड़-बकरी जकाँ ताकि आनब थोड़े होइ छै असान?
गह पर गह फाटल जाइत छै
डेग डेग पर बजरै छै लिलसा आ लसेंग के मोड़
कोन जहाज ओते तेज उड़त जानेमन
जते तेज उड़लहु तोहर अरमान!

मुदा आदमी जखन हेराइए
पछिलो के पछिला जनमक देखाइ छै दृश्य
गरीब माइक पेट सँ जनमब
जड़ब सख-सेहन्ताक ऐन नेनपन मे

मोनो जँ तोरा पाड़ी तँ की कही जे ग्लोबल दरिद्रा मे

फाँसल स्त्रीक अंतिम शरण थिक देह
जे कि असल मे ओकर हथियार थिक?
की कही जे हर दिन मस्ती के एक दिन थिक चौदह फरबरी
तँ किए नइँ थिक एक दिन बारह फरबरी कि तीस जनबरी?

मोनो जँ पाड़ी तँ की ई कही
जे आदमी जँ हेरा जाय धरती पर
तँ ताकल नइँ जा सकैए
जेना समुद्र मे नोन।

दुश्मनी

दुश्मनी निमाहलें तँ एक तुहीं निमाहलें जान!
अइ सँ पहिने सुननहि टा रही

देखलियौ जे कोना अपना केँ नोंचि-नोंचि अपने सँ अलग क' लेलें
जेना अलग केने छला कर्ण अपन कवच-कुंडल, दान निमाहैत
तों नोंचलें निमाहैत दुश्मनी

तलफैत रहलौ भीतर अतमा
चलैत रहलौ भीतर टीस के हहारो
मारि लेलें मुदा, अपन मोन
नो तँ नो। नेवर तँ नेवर।
खूब निमाहलें!

घुरि भेलौ नइँ फेर कहियो अपन सहज जीवन मे
अदृश्य तनाव मे गतानल रहलौ जीवनक्रम
नइँ तनाव तँ आत्मदया
सेहो नइँ तँ सकल निरपेक्षता,
बिलखैत रहलें अपन अतल मे सगरो राति सगरो दिन, से सही
मुदा दुश्मनी निमाहब नइँ बिसरलें

कोमल शिरीष के गाछ छलें एक
जकरा बहुते विशाल हेबाक छलै
मुदा, जे अइ बेदरदी दुनिया सँ रूसल
रूसल गाछ छलें सुखायल तूँ शिरीषक जान!

ताकल लोक

मामूली होइछ नइँ ताकल लोक
अइ बेमुरव्वत दुनिया मे
जतय चारूकात सिकरा आ शिकारीक हेंज जाल ल' तैयार
ताकल लोक त्रास मे भेटल पानिक घोंट होइ छै जान!

बेरथ केलकौ जे ओतेक ओतेक देखल तोहर सपना
घरौंदा छलें बनौने जते, सबटा केँ मटियामेट केलकौ
समाप्त केलकौ तोहर स्वर्ग
बिन बात के जे केलकौ एत भारी बिदत
तकरा सँ दुश्मनी नइँ तँ आर की?

मूर्ख छें जान?
जबरन जोतै छें हेंग?
रे, ओकरा कहियो पुछलीहीए?
ओहो तँ यैह सब बात कहै छौ तोहर नाम लगा क'
ओकरा हिसाब मे तूँ गद्दार
जिनगी केँ सात तह नरक मे ढकेलि दै वाली तूँ!

जुलुम नइँ कर जान
पहिने जा क' मिल ओकरा सँ
फरिया पहिने जे क्यो सच्चो मे गद्दार कि सबटा दुनियें के भांगठ

ताकल लोक मामूली नइँ होइ छै दाइ गे
जनम बीति जाइए एकटा लोक केँ ताकै मे
अपन एत्ते लंबा खोजयात्रा केँ निरर्थक कर नइँ
मिल पहिने ओकरा सँ!

कबूल नइँ भेल प्रेम

प्रेम तँ हम पहिनहुँ केलहुँ अनेक
आ आबो करै छी
मुदा चीड़ि क' जँ कहियो देखू हमर अवचेतन
डेराइत रही प्रेम सँ पहिनहुँ बहुत
आबो डेराइत छी

एहन अभागल जात्री बनलौंहें कहियो
जकर गाड़ी तीस सेकंड लेल छूटि गेल हो?
हम बनलौंहें,
जहिना कि ताप पहुँचय डिग्री निनानबे
स्विच करी हम ऑफ आ पड़ाइ
भाफ बनब कहियो हमरा कबूल नइँ भेल
जे बनब भाफ तँ बिलाएब अनंत मे

गाड़ी छूटल की जे कहियौ छोड़ि-छोड़ि देलियै
कबूल जँ भेल नइँ भाफ बनि क' उड़ि जाएब हमरा
तँ कोना कहबै जे
प्रेम करब हमरा कबूल भेल!

दायित्व

दायित्व जिनकर बहुत छलनि हमरा पर
हमर जिनगी छल हुनका सभक पुश्तैनी

हुनके सभक लेल हम साँस लेलहुँ
करेज धड़कल तँ हुनके सभक लेल
हुनके सभक मंगल कामना लेल
सब दिन हम अमंगल बरल

आब एकर की कयल जाय जे
किछु छल एहनो जे हमरो नीक लगै छल
बाट ओ मुदा, दोसरा दिस जाइ छलै
की कयल जाय!
हूक उठय कहियो—
जिनगी जियल जाय किछ अइ तरहें
कि लागय हँ, जिनगी जीलहुँ अछि

की कयल जाय
कि दायित्व जिनकर बहुत छलनि हमरा पर
हमर हिस्साक जिनगी वैह लोकनि दफानि लेल
नइँ–नइँ, दफानि लेब कहलो कोना जेतै एकरा
जखन कि बारि एलहुँ स्वयं हम जा क'
जेना मातृभूमिक बलिबेदी पर वीर लोकनि
प्राण बारलनि अछि।

बजारक भाषा

अइ दिन मे जनमल लोक
बजै जाइ छथि एकटा एहन भाषा
जइ मे देह होइए बस देह
बाँकी बजार होइए
वाम के तँ नामो धरि ने लैह
जे हैत से बस दहीन
ओतय तँ सब कथू रेडिमेड उपलब्ध

होइए ओतय उन्मत्त सब कथू
एक भाग अहंकार, एक भाग हिंसा
बाँकी बस भोग
ओतय तँ फूलो जँ फुलाबय अहैतुक
तँ होइ छै, किछु धोखा भेलैए

एकर सभक भाषा तू पकड़ि पेबहिन बाबू?
अइ दिन मे जनमल लोकक भाषा?
हमरा तँ होइए, नइँ पकड़ि पेबहिन
कि पकड़ि लेबही? कि नइँ पकड़ि हेतौ?

कोनो बात नइँ
इहो सब तँ तोहर भाषा नहिये पकड़ि पेतौ
रे, बजार के जँ भाषा चलल
तँ सब सँ पहिने तँ भाषा अबूझ हेतौ हमरे-तोरे!
अइ मे की रोख, ककर दोख!

अइ सदी मे प्रेम

एक दोसर केँ बेकूफ बना रहल छल दुनू
मुदा जँ पुछियौ
तँ बजै छल बारंबार-बारंबार
कि बहुत बहूत बहूऽऽऽत प्यार करै छी

कहल शब्द पर जँ जाइ
तँ देह छल ककरो आओर के
जान बसै छल ककरो आओर मे,
मुदा होशियार जे कहबै कम छल, से दू मे सँ एक्को नइँ
घसकय नइँ दैत छल कखनो
अपना-अपना पयर तरक जमीन

हमरा पहिल बेर समझ मे आएल
विखंडन सेहो
एक वाजिब थ्योरी थिक
ओ गैप सेहो
जे दू शब्दक बीच पाओल जाइछ,
आ ओ अंतराल
जे ओइ दुनूक देहाचार मे पाओल जाइक रोज-ब-रोज

ओइ दुनू केँ प्रेम करैत देखल
तँ लागल
देरिदा केँ थ्योरी बनबैत देखैत छियनि।

वाह रे दुनिया

दू दिन के दोस्ती
आ दू हज्जार बेर घोखने हेती
जँ ई दोस्ती नइँ, तँ हम नइँ

चारि दिन के ई जिनगी
आ चारियो बेर नइँ पड़ल हेतनि मोन
किएक ई जिनगी?
कथीक लेल जिनगी?

वाह रे दुनिया!

नफा

बस बस, जरा सा
एके रती कनियेक
मिसिया भरि क' लेथि टाँग सोझ
कि संभोगक दृश्यविधान हाजिर अछि

भागदौड़ मे सेक्स पर छपलैक अछि विशेषांक
कवर पर कन्या लोकनि फहरा रहली अछि
स्त्री-मुक्तिक पतक्खा
सौदागर लोकनि बनला अछि ध्वजवाहक
नीक ध्वजवाहक बनला अछि सौदागर लोकनि

निशाँ तँ बहुत होइ छै प्रेमो मे
मुदा ओइ मे सौदागर केँ एते नफा कतय पाबी?

गल्तीनामा

—मुझको राणा जी माफ करना गल्ती म्हारे से हो गई
छह मास सँ ओ महिला चिकरि रहल अछि
शहरक गली-गली मे ओकर शोहरत
पेट्रोलक आगि जकाँ पसरि रहल छै

मदमस्त तलफलाइत सीत्कार भरैत ऊह-आह
ओ महिला गल्ती (?) सँ बूझि लेलक बहिनोइये केँ पति
आ आब अपन गल्तीनामा शहर-शहर मे परचारि रहल अछि

साल दू साल सँ हम रही परेशान
ई उत्तर आधुनिकता की थिक भाइ
आधुनिकतो सँ उत्तर, की थिक?
आइ चमकला अछि हमर ब्रह्म
कहीं यैह तँ नइँ थिक
उ त्त र आ धु नि क ता?

ऑडियो कैसेटक शकल मे समटल ओ महिला
दिन मे चौरानबे बेर दोहरबैत अछि अपन गल्ती
शहरक बैटरी तमाम डिस्चार्ज होयबा पर अछि
थाकि रहल अछि विद्युत मंत्रालय बिजली बँटैत-बँटैत
मुदा, ई महिला अछि जे एकर गल्तीनामा सठिये नइँ रहलैए

—ई गाना कहिया खतम हेतै
पूछैए विकल हमर आत्मा अधीरा

—सब क्यो भ' जाथु उत्तर आधनिक साइत तहिये।

नियम

नान्हि टाक अरमान छै बस ओकर
एकटा पति हुअय खूब प्यार करै बला,
कखनो पिटियो जँ दिअय तामस मे, तँ चलतै
मर्द के से शोभा सुंदर छी,
मुदा हुअय धरि प्यार करैबला,
बाल-गोपाल जनमय से सुंदर-सुंदर, गोल-मटोल
घर हुअय एकटा संपन्न, जै पर चलैत हो ओकर शासन
धन हुअय एतबा जे चाही तँ कहियो
मल्टीप्लेक्स घुमि आबी, कहियो हिल स्टेशन

अइ फ्रेम मे जे अँटय से भेला सुपुरुष
सुपुरुषक बड़ी-बड़ी दाम
मुदा, बेटीक बापो नइँ अहदी, ओहो तैयारी केने पूरा
जतय हेतै ततय सँ लाबि देतै
जते मे हेतै तते लगाओत गाँठक रुपैया

प्रेम होइए अपराध
प्रेम रंडी सब करैए
बापक बेटी बड़ बुझनुक
कइयो लेत जँ प्रेम, बेर-बेर प्रेम
गछत नइँ जे प्रेम केलहुँ
नुका क' राखत

बेटी करत कुलक उद्धार
बेटियेक बियाह करैत
मरैत रहता बाप हजार
आ बेटी तँ वाजिबे!

एक बेटीक आत्मनिवेदन

रंगबिरहा गाछ-बिरीछ सँ भरल अइ दुनिया मे
हम अहाँ लेल बबूरक काँटे बनि बसलहुँ बाबू

फूलो जँ फुलाएत तँ कोन काजक?
मुदा पौध तँ सब दिन पौधे नइँ रहत
जुआ क' अजोध गाछ बनि जाएत एक दिन
काँट गड़त
अहाँक श्रमार्त शिथिल शरीर पर
एखनो तँ हम काँटे बनि गड़ैत रहै छी बाबू

लोक कहै छथि
दहेज मे देबाक रुपैया जखन पूरि जाइ छै
कुमारि बेटी जुआन भ' जाइए

जुआन तँ हमहूँ भ' गेलहुँ
लेकिन कहाँ देखै छी
अहाँक बदहाल जेबी मे रुपैया
कहियो घरनिकाला के पीड़ा
कहियो बेरोजगारीक दंश
चाह मे मिलल दूध सन
कोना मिझरा गेल अछि
जुआन बेटीक बाप हेबाक व्यथा
अहाँक चेतना मे बाबू

भेटितथि जँ आब कहियो कृष्ण
करितियनि सवाल
गरीबक बेटीक जुआन हएब
कत भारी गारि निरमौलहुँ बेदरदी!

कोशीक धार मे कतहु दूर

दूर-दूर तक पसरल छल निर्जन
कोइ कतहु नइँ छल दूर-दूर तक

केहन आश्चर्य रहै
दूर-दूर तक कोइ कतहु नइँ छल
मुदा, तैयो उमगैत छल जीवन
पूरा विराट बनि क'

उमगैत जीवन देखाइत छल आसमानक उत्सव मे
मुदा ओकर मूर्त रूप सेहो ओत्तहि छलै मौजूद—
कतहु दूर, बहुत दूर देखाइत छल एकटा नान्हि टा नाह
ओइ पर मौजूद दू-दू प्राणी
दुन्नू संवाद करैत

केहन आश्चर्य रहय
संवादक खिलाफ ठाढ़ देश मे
दू-दू प्राणी रहय आबाद, संवाद करैत
जखन कि अग्गह-बिग्गह धांगि लिय' नजरि
कोइ कत्तहु नइँ छल मनुष्य
यैह दुनू, बस...

मुदा, की कहू, कहल नइँ जाय
ओहू सँ पैघ आश्चर्य समूर्त ठाढ़ रहय ओत्तहि

ओइ मे तीन गोटे छल
नदी, धरती आ आसमान
ओहो तीनू सेहो करैत संवादे
जखन कि कुल जमा तीने रहय
हेबाको रहय कुल जमा तीने
(भगवान केँ अइ मे कथी ले सानबनि)
आ तीनू ओत्तहि मौजूद
तीनू संवाद करैत
के कहि सकै छल जे संवादक खिलाफ ठाढ़ देशक ई बात थिक!

बड़ी काल धरि एकटक जखन निहारल, कयल अख्यास तँ अखरल
स्त्री ओतय नइँ छलि,
लेकिन बेकारे अखरल
के कहि सकै छथि यकीनन
जे स्त्री ओतय नहिये छलि
महराज, स्वयं नदी छलि स्त्री बनि क' सौंस विस्तार मे

असल के तँ जे स्त्री हेती
से कोनो दोसर मोर्चा पर लड़ि रहल हेती ...

कोविड पॉजिटिव

मोना के आइ फोन आएल तँ भेल जे हँ
अही फोनक इंतजार हम करै छलहुँ पाँच दिन सँ

छव मासक बेटा छै कोर मे, से छल बीमार
ओ बहुत परेशान छलि
पुछलियनि तँ कहलनि हँ, आब ठीक अछि बौआ

तखन चलय लगलनि हुनकर प्रश्न सभक पमारा
बताउ तँ एना किए? एते लोक कार्यालय मे, अहीं किए पॉजिटिव?
सभक भला चाहनिहार अहीं, केयर केनिहार अहीं
अहीं सब सँ काजुल, सब सँ पाबंद अहीं
सब सँ बेसी नियम धेने चलैबला अहीं, आ अहीं बीमार!

अहाँ केँ जँ किछु भेल
तँ भगवान केँ भेटतनि की
ताकनहु कोनो जवाब, कहू तँ!

सुजाता

मानै छी जे आम स्त्री केँ चाही जे सबटा चीज
हमरा किन्नहुँ हुनका मे भेटत नइँ

शय्याक सुख के तँ बाते करब की माने
एकटा चुंबन जँ द' दीतथि जानदार,
सेहो हुनका सँ चाहब व्यर्थ

मुदा सब कथूक बादो
ओ जे हुनकर आँखि छनि झुकल-झुकल
आ किछु कहियनु तँ सुनै जे छथिन एकाग्र
ओह, लगैए संपूर्ण सुख पा गेलहुँ नारीत्वक
एना सुनि सकैत अछि हमरा एकटा पुरुख!

लगैए हम हुनका पीबि रहल छियनि
ओ सुनै छथि एना
जेना समस्त चराचर थिक एखन हुनकर कान
कान द' क' जाइत छी हम हुनका भीतर
गहगह मे होइत छियनि व्याप्त
ओ हमरा भीतर तँ हमहू की नइँ तहिना हुनका भीतर
हमरे तँ ओ सुनै छथि!

कहू एहि सँ बाढ़ि की?
कथी थिक मिलन? कथी थिक संभोग!

सुजाता यदि चाहती कोनो पुरुख केँ
तँ साफे बुझू बुद्ध केँ चाहती सखि!

बाँकी तँ दुखे थिक संसार
सैह बात ओहो कहै छथिन
आ हमहूँ महसूस करै छी रोज-रोज दिन।

घरनी

ओ दिन मोन पाड़ह जोगी, ओऽऽ दिन!

भरि-भरि दिन नोकरी खटि क' आबहक
तँ माँजहक अइँठ-कुइठ बासन, जराबहक स्टोव
कहियो खास जरबैते काल स्टोव, मोन पड़ह
जाह, मटी तेल तँ छैहे नइँ
कहियो चूड़ा भुजैत जागह अरमान
चिनियाँ बदाम जँ रहितै तँ की सनगर होइतय भुज्जा

कहियो दालि-भात-चोखा खा क' बचबह समय
कहियो भात-तरकारी खा क' पाइ
सोचहक तँ बड़ भारी बात ई भेलै ने
जे भोरे उठि क' तैयो गाओल करह पराती
लिखियो पढ़ि लेल करबे करह चारि अच्छर
आ कि बचबे केँ पढ़ा लेल करह,
ने तँ कत्तय रहह सवकास?
झाड़ू-बहारू आ चौका-बासन करैत-करैत
नोकरी भ' जाह कंठ पर आबि सवार

संपति की तँ एकटा थारी, दूटा गिलास
डेकची लोहिया एकहक टा
बेलना चकला, तवा आ करछूल

मोन छह, पहिल कूकर जे कीनि अनने रहह घर
बधैया बाजल रहह, बधैया
घर मे तँ नहिये, तखन मोन मे!

घर ने रहह तहिया ने छह आइ
तहियो रहह असकरे, आइयो छह असकरे
की करबहक जोगी हौ
ई ओ राग छी जे सब साज पर बाजत नइँ
तखन तँ कहह
असकर अछि संसार
असकरे आएल, असकरे जेबाक छै एक दिन सब केँ
कोन हर्ज जे तै दिनक लेल तैयारे छह चौबीसो घंटा
कोन हर्ज जे जस के तस धरि देने छहक चदरिया!

मुदा,आइ देखहक
भोरे-भोर डेरा मे अबै छह दाइ
करै छह झाड़ू-बहारू, बरतन-बासन
आ बासन कोन?
अलग-अलग साइज के कूकर कराही
नॉन-स्टिक तवा, लोहिया, छोलनी समेत
ढंग-ढंग के रखने छह सरंजाम
ई की तँ फ्रिज, जै मे ताजा-ताजा राखल माजा
ई की तँ ग्राइंडर-जूसर-मिक्सर
चट द' तैयार मसाला
फट द' तैयार कद्दूक जूस
हौ जी जोगी, राजा छह मरदे, राजा छह

ठाढे ठाढ़ बेलि लै छह रोटी
मिनटो मे सिझा दै छह अन्न गैसक चुल्हा
हौ, कोना साबित करबहक जे सुखी नइँ छह

के अभागल दूसि सकतह
जे विकास नइँ क' सकलह!

अइ पर आब जँ तू कहबह
जे हाथ तँ झरकाब' पड़ैए अपने
तँ लगले हमहू ने कहबह
जे नाच' तँ पड़िते छै पृथ्वी केँ एखनो अपने

तूँ कहबह, फाइव स्टार होटल मे तँ नहिये ने खाइत छी
तँ हमहू कहबह
दलालीक एहि स्वर्णयुग मे तँ सेहो अपने ने कमाइत छी

लेकिन, तू तैयो कहबह हौ हेहर,
घर मे तँ एखनो नहिये ने भेलि घरनी
तँ हमहू कहाँ कम थेत्थर
चट द' कहबह
तै लेल तँ कोंढ़ मे चाही दम, बड़ नी!

कवि किएक आत्महत्या करैत छथि?

कवि तँ बड़ नीक होइत छथि ने दीदी
ओ नीक-नीक बात लिखै छथि
ओ हमरा सब केँ जीयब सिखबै छथि
हुनकर बात कते सत्य होइछ
ओ हमरा सभक हिस्साक जीवन देखबै छथि!

जतय जा ने पाबथि रवि
दीदी, कवि ओत्तहु पहुँचि जाइ छथि
तते शक्तिशाली होइ छथि आत्मा के

आइ जखन कि क्यो रोटी सँ खेलाइए क्यो रुपैया सँ
अक्सरहाँ तँ क्यो बम आ बंदूक सँ खेलाइए,
कवि जौं खेलाइयो चाहथि तँ बस शब्द सब संग
खेला क' भ' जाइ छथि संतुष्ट

ओ अन्हार एकदम्म पसंद नइँ करै छथि
इजोतक ततबा तड़प होइ छनि हुनका भीतर
हम तँ सुनने छी
कते कवि अपन अस्थि-मांस धरि जरा क'
धधकौने रखै छथि आगि

ओह, कवि बड़ नीक होइ छथि दीदी
अपन पड़ोसिया केँ ओ कहियो दिक नइँ करै छथि
लुक्खी आ बगड़ा तक केँ नइँ
ओ तँ दूभि आ सेमार धरिक जीवन केँ चाहैत छथि बचल रहय

तखन फेर दीदी, ई दुनिया किएक एहन अछि?
कवि किएक आत्महत्या करै छथि?

पृथ्वी पर प्रेम

बहरेलहुँ जहिना
फूल हँसि रहल छल
रोमांचित भ' रहल छल दूभि
निछाबर करैत अपन अजूबा लाली
गुलमोहर पुछलक कुशल छेम
चमेली तँ बेचारो बिचकाइये देलनि दाँत
बजली—स्वागत

बसात आबि क' सोहरौलक हमरा—
कहह बाबू, कहह
भीतर एखनो ओतबी नमी छै
कि हमरे सब मे ग्रहणशक्तिक कमी छै?

अज्ञात भय सँ सहमि क' सकुचि क'
अंकुर हम निकलल रही बाहर
जानि नइँ कतबा प्रेम हेतै, कतबा अप्रेम बाहर

की पता छल
अंदर जे रहय से तँ बस बीज रहय
बाँकी जे अछि से तँ एत्तहि अछि।

घृणाक विरोध मे

जे किछु नइँ क' सकता कथू आन
सेहो दूटा वचन जरूर उचारथिन
जे कनियो बीस हेता
से जरूर दस लोक मे बात पहुँचेथिन

जे लड़बा जोग हेता, लड़ता
एहनो लोक हेता जे जान देथिन, मरता

बाँकी किसानो अपन फर्ज करता
आ सैनिक सेहो
कवि जे हेता से उचित लिखब कोना छोड़थिन
ने छोड़ता चिंतक
विनाश के पल केँ देखब लग अबैत लगातार

एहन थोड़े हेतै
जे व्यापि लेतै धरती केँ
तनल बरबादीक दिन
आ कतहु क्यो आहटो नइँ करतै?
धुकधुक तँ करैत रहबे करती धरती सब दिन
जेना प्रेमी लोकक दिल।

●●●